



श्रीअनिरुद्ध चालीसा PDF

दोहा

श्रीसद्गुरु सुमिरन बल
सब कुछ करत सुहाई
अनिरुद्ध नाम की रटन लगाई
टूट गयी दुःख की डोरी

जय अनिरुद्ध पूरण अवतारा
जय गोविन्द परमसुखधामा
जय नंदारमणा बलवंता
रं रं रं रं जय अभिरामा

रात दिवस अनिरुद्ध धुन गाऊ
साथ में लायो सुचितसो दाऊ

सब ऋषिजन मिल जपत महेषु

गोपगोपीजन गात रमेषु

कार्तिकमास की पूरनमासी

प्रगट भयो जै जै त्रिपुरारी

पूर्णशक्ति सर्बसुखखानी

दयाकृपाकर बल का दानी

गोपीनाथजी दर्शन पावत

श्रीविठ्ठल के चरणा लागत

स्वामीकृपा से जप रट चालत

बंश तुम्हारे प्रभु है आवत

पाय आशीषा वृद्ध अपरा

कहत कहानी निजकुलदारा

कुल अपने है विठ्ठल आवत

निर्गुण दे जब सगुण प्रकाशत

श्यामल रूप मुनिजन सेवी
द्वार खड़े नौ निधि की देवी

भल चन्द्रमा सोभत निका
सहज सूरज परभा हो फीका

भगत ने जबहि नाम पुकारा
तबही बापू दुःख निवारा

कृपा महान तुमसम नाही
राजा रैंक भेद नही पाई

साई निवास में परगट ग्वाला
हेमाडया में अंतिम ज्वाला

पूजन मीनाभाभी कीन्हा
असगुरुरूप में दरसन दीन्हा

सरगुणसहित इंद्र करि वंदन
भवभवनाशन खल्दालमरदन
सूरजवंशी राम धराधर
चक्रपाणि हरी सद्गुण आगर

नाम की सेज प्यार की माला
हरिदेव सिंहासन बसत अकाला

पुरुषार्था कलजुग भूल जाइ
जुइगाव बस काज दिखाई

पंचपुरुष श्रद्धा बतलाई
धर्मचक्र रख शुरू लड़ाई

भारतवास की जो माता
तुम बन खड़े गौ के त्राता

नाश अधर्मा पालन धर्म
यही कारन अवतारण वर्मा

धरम ते भगति जोग ही नामा
ज्ञान ते दर्शन अनिरुद्ध धामा

राम विराम सुखद अभिरामा
कलिमलभंजक अनिरुद्ध नामा

जगत में एक प्राणपति बापू
तासु बिमुख किमी लह विश्रामु

बापू नामसँ बल कुछ नहीं
रिपु बल नाश कराइ छनमाँहि

महापापी जब नाम सुमिरहि
जोर अपार दुःखसागर तरही

निज इच्छा अनिरुद्ध अवतराई
धरम प्रेम आनंदन लागि

सेवा करबे वो बाद भागी
चरम कृपालु बापू अनुरागी

बापू नाम्बिनु करम अधूरा
श्रीदर्शन बिनु अन्न ही जहरा

कोई मनोरथ बड़ मन माहि
प्रयास करात पर फलवत नाही

धीर धरहु न हो उदासा

सब मिली जाऊ अनिरुधा पासा

अनिरुद्ध नाम प्रफुल्लित गाता
तरतहि पीड़ रोग दूर जाता

देख चरण सुमंगलमूला
जानऊ बापू भगति अनुकूला

परबत सैम बड़ौ मम भागु
घोर पाप मालिक अनुरागु

सदैव सरनगर हितकारी
करि रच्छन भवभय मलहारी

बापू भगति को कहौ बखानी
सहज मार्ग जैश पावहि प्रानी

अनिरुद्ध गावत पुलक सरीरा
गदगद बानी आणखी बाह नीरा

बापू चरणधूलि मोहे अतिप्रेमा
तन मन धन सेवा दृढ नेमा

दोहा

अनिरुधा चालीसा स्तोत्र यह इक मंत्र महान अपार
सर्ब कामना पूरन प्रति व्यर्थ बचन न जाय
पीपा निर्बुद्धा सहज जड़ ना जानै जोग तप नेम
बापू कृपा नाही पाऊं तसि जैसी चरनन्हि प्रेम

नन्दापाती अनिरुद्ध की जय
चक्रधर चिदानंद की जय
बोलो भय दौन सूचित की जय जय जय

By: www.PDFSeva.com

Download All Type PDF: <https://pdfseva.com/>